RNI No. : UTTHIN/2019/78487

Azim Premji Foundation

शैक्षिक प्रवाह

चतुर्मासिक, देहरादून, वर्ष–1, अंक–3, अप्रैल 2020

भीतर के पन्नों पर...

- सीखने और जानने के मेरे अनुभव
- हर बच्चे को देना समझ का चस्का
- मास्साब के रजिस्टर से दो यादें
- जीवन दिखाता है औचक आईने
- बच्चों से दोस्ती करना सीखा

निःशुल्क वितरण हेतु

शैक्षिक प्रवाह

Shaikshik Prawah

चतुर्मासिक, देहरादून, वर्ष -1, अंक - 3, अप्रैल 2020

सम्पादक

कैलाश चन्द्र काण्डपाल

सह सम्पादक

प्रतिभा कटियार, उत्तराखण्ड
प्रदीप चन्द्र डिमरी, उत्तराखण्ड
अशोक कुमार मिश्र, उत्तराखण्ड

विशेष सहयोग

सिद्धार्थ जैन, मध्यप्रदेश
पुरूषोत्तम ठाकुर, छत्तीसगढ़
वीरेन्द्र शर्मा, राजस्थान

दोनों आवरण चित्र

प्रियंवद

डिजाइन

बिजेन्द्र बलोनी

प्रकाशक

Azim Premji Foundation

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
134, डोडाकन्नेली, निकट विप्रो कॉरपोरेट कार्यालय,
सरजापुर रोड, बंगलौर 560035

प्रकाशन स्थल

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
आनंद टावर, 2, सहस्त्रधारा रोड, अधोईवाला, देहरादून–248001
ई–मेल : pravah@azimpremjifoundation.org

पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार और मत लेखकों के अपने हैं। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का शैक्षणिक और गैर व्यवसायिक कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसके लिए लेखक एवं प्रकाशक से अनुमति लेना एवं स्रोत का उल्लेख अनिवार्य है।

विषय सूची

1.	संपादकीय		4
2.	सीखने और जानने के मेरे अनुभव	लाल बहादुर वर्मा	6
3.	हर बच्चे को देना समझ का चस्का	अपूर्वानंद	11
4.	प्रवाह ने संवाद बनाया है	अनंत गंगोला	13
5.	मास्साब के रजिस्टर से दो यादें	प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल	15
6.	पहाड़ से थार का सफर	शोभन सिंह नेगी	19
7.	सीखना यह कि क्या नहीं सीखना है	बिजू नेगी	23
8.	जीवन दिखाता है औचक आईने	सुमन केशरी	26
9.	सिखावन में कुछ 'अन्य'	सिद्धेश्वर सिंह	28
10.	बच्चों से दोस्ती करना सीखा	ममता सिंह	30
11.	अपनापन दिखलाओ भाई	राकेश जुगरान	33
12.	मेरे शिक्षक होने की शुरुआत	दिनेश कर्नाटक	36
13.	रचनात्मक बनाता है मित्रवत व्यवहार	महेश पुनेठा	38
14.	प्रेम हो जाता है, नफरत सीखनी पड़ती है	राजेश उत्साही	41
15.	बच्चों की पहुंच में बनी रहना चाहती हूं	रेखा चमोली	44
16.	एक चिट्ठी बद्री सर के नाम	के.आर.शर्मा	50
17.	जितना भी सीखा कम लगता है	मनोहर चमोली 'मनु'	53
18.	सीख रही हूं हर दिन हर किसी से	अनुपमा तिवाड़ी	55
19.	सीखना, ग्रीष्मावकाश में कुछ हटकर	दीपक पाण्डेय	58
20.	पढ़ने लिखने की संस्कृति का प्रवाह	कमलेश जोशी	60
21.	मेरे बच्चों ने मुझे गढ़ा है	मीना जोशी	61
22.	बेहतर विद्यार्थी होना सीख रही हूँ...	प्रतिभा कटियार	64
23.	सीखने में शामिल होता है रोटी और सम्मान	जगमोहन कठैत	67
24.	सीखने का एक मंत्र होता है	महमूद ख़ान	71
25.	अगर सवाल खुद जवाब बनें तो...	ताहिरा ख़ान	73
26.	बात करने से बनती है बात	उषा त्रिवेदी	76
27.	क्या बनोगे बेटा	दीपक दीक्षित	79
28.	क्या कहते हैं प्रवाह यात्रा के आंकड़े?	विपिन कुमार चौहान	81

सिखावन में कुछ 'अन्य'

बहुत सारे लोगों को लगता है कि पढ़ाना एक बेहद असान काम है। ऐसा मुझे भी पूरी गंभीरता से लगता है लेकिन साथ ही यह भी लगता कि इसकी आसानी ही इसकी असल दुश्वारी है क्योंकि सहज होना कठिन काम है।

✓ सिद्धेश्वर सिंह

यह वाकया 1995 की गर्मियों का है। जगह एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज शिमला। उन दिनों मैं अपने चार सप्ताह के अध्ययन प्रवास पर हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के खूबसूरत कैम्पस में मेहमान था। देश भर से आए पचासेक युवा प्राध्यापकों का जमावड़ा था। एक दिन यह बताया गया कि अगले दिन प्रोफेसर यशपाल हमें संबोधित करेंगे। अब यह बताने की जरुरत तो नहीं होनी चाहिए कि ये प्रोफेसर यशपाल कौन! अगले दिन वे क्लास में आए। निदेशक महोदय ने उनका परिचय कराते हुए वैज्ञानिक, एकेडेमीशियन, प्रशासक और जैसी बहुत– सी बातें उनकी प्रशंसा में कहीं। वे मंद–मंद मुस्कुराते रहे और जब बोलने खड़े हुए तो यह कहते हुए शुरुआत की कि मैं एक 'लर्नर' हूं।

मुझे लगता है कि इतना परिचय पर्याप्त है।

वे आधे घंटे बोले। उनका वक्तव्य बेहद मामूली समझी जाने वाली चीजों के महत्व और उनके 'आब्जर्वेशन' पर था। जब संवाद सत्र शुरू हुआ तो राजस्थान के सांभरलेक से आए एक साथी ने पूछा कि हम सब उच्च शिक्षा से जुड़े अध्यापक हैं।

बाकी स्तरों के अध्यापकों की तरह हमारी ट्रेनिंग क्यों नहीं होती? यशपाल सर का जवाब था– 'यह इसलिए कि आप एक बंधे–बंधाये घेरे का अतिक्रमण करें ,उसे तोड़ें और लगातार 'इन्नोवेटिव' बने रहें।' आगे इसी बात को खोलते हुए उन्होंने कहा कि आपके अपने विद्यार्थी जीवन में बहुत से अध्यापक मिले होंगे। यह आपको तय करना है कि उनमें से किसे 'फॉलो' करना है और किसकी तरह का नहीं बनना है।

आज उस प्रसंग को याद करता हूँ तो लगता है कि कैसे जेआरएफ होने के दस–पंद्रह दिन दिन बाद ही मुझसे कहा गया कि कल से तुम एम.ए. फाईनल ईयर को पढ़ाओगे क्योंकि उमा मैम मैटरनिटी लीव पर जा रही हैं और उनका पेपर 'भाषा विज्ञान' तुम्हें इसलिए दिया जा रहा है कि यह तुम्हारा स्पेशल पेपर रहा है। सच कहूँ, मुझे बिल्कुल भी घबराहट नहीं हुई न ही कोई संकोच या हिचक की दर पेश हुई। ऐसा इसलिए कि एक विद्यार्थी के रुप में तब तक यह समझ में आने लगा था कि यदि कभी खुद पढ़ाने का मौका मिल सकेगा तो क्या–क्या ऐसा है जिसे नहीं करना है। इस नहीं करने वाली चीज में पाठयक्रम और कोर्स वाली बात से अधिक 'अन्य' बातें थी। आखिर यह अन्य क्या है? या कि जिसे मैं अपने तरीके से अन्य

समझता हूं वह आखिर है क्या चीज?

महाकवि बिहारी का एक दोहा है जिसमें वह नायिका के सौन्दर्य का प्रतीक समझे जाने वाले नेत्रों के बारे में बात करते हुए बताते हैं असल बात नेत्रों का आकार–प्रकार नहीं बल्कि 'वह चितवन औरे कछू' है जिसके वश में 'सुजान' भी हो जाते हैं।

एक अध्यापक के रूप में मुझे लगता है कि पढ़ना–पढ़ाना भी एक तरह का 'औरे कछू' है जो सहजता और संवेदनशीलता के बगैर पकड़ में नहीं आता तो नहीं आता। तीन दशक से अधिक समय से एक अध्यापक के रूप में काम करते हुए जब पीछे मुड़कर देखता हूं तो पाता हूं कि साझेदारी बड़े काम की चीज है। मुझे लगता है कि शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच साधारणीकरण का होना भी बहुत जरूरी है। हिन्दी पढ़ाते हुए अक्सर लगता है कि पारंपरिक रूप से साहित्य पर जोर अधिक है भाषा पर कम। जबकि होना यह चाहिए कि साहित्य को एक 'टूल' के रूप में भाषा सिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाना बेहतर साबित होता है। यह बात मैं अरुणाचल प्रदेश में बिताए साढ़े आठ साल के अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ और उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों के अनुभव के आधार पर भी। साहित्य में भी अक्सर देखता हूं कि बदले हुए समय और संसार में अन्वय, शब्दार्थ, व्याख्या, भावसाम्य से कहीं अधिक संदर्भ और प्रसंग बताया जाना जरूरी है। बी.ए. प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों को प्रेमचंद की चर्चित कहानी 'नमक का दारोगा' पढ़ाते हुए पता चलता है कि पूर्वज्ञान के आधार पर सभी विद्यार्थी यह जानते होते हैं कि दारोगा (बोलचाल में 'दरोगा') किसे कहते हैं। वह कैसा दिखता है लेकिन जब यह सवाल आता है कि पुलिस का दारोगा तक तो ठीक है लेकिन क्या नमक का दारोगा जैसा भी कुछ होता है? मुझे लगता है कि यहीं पर अध्यापक का 'औरे कछू' काम आता है कि वह इतिहास और अतीत में उतरने की साझेदारी करते हुए नमक सत्याग्रह तथा 'दांडी मार्च' तक पहुंचे साथ यह भी बताए कि नमक का हमारे जीवन व स्वास्थ्य की दृष्टि से क्या महत्व है।

मैं यह नहीं कहता कि विषयान्तर हो लेकिन बात में बात तो निकलेगी लेकिन यह सावधानी बरतनी होगी कि वह बतकही न बन जाय। बहुत सारे लोगों को लगता है कि पढ़ाना एक बेहद असान काम है। ऐसा मुझे भी पूरी गंभीरता से लगता है लेकिन साथ ही यह भी लगता कि इसकी आसानी ही इसकी इसकी असल दुश्वारी है क्यों सहज होना कठिन काम है। अपने ज्ञान के आतंक से डराने वाले अपने शिक्षकों को याद करते हुए बस इतना ही कहना चाहता हूं कि साझेदारी से बहुत सारे काम सहल हो जाते हैं और ऐसा होना आनंदप्रद तथा सुखद होता है। मेरी कामना है कि तमाम तरह की जल्दबाजी, तात्कालिकता, प्राप्तांकों की दौड़ और पढ़ाई का मतलब किसी परीक्षा को 'क्रैक' करने के इस कलित कोलाहलपूर्ण समय में थोड़ा ठहरकर, थम कर किसी चीज को उसके दूसरे सिरे से देखा जाना चाहिए ताकि इस समाज और संसार को सुन्दर बनाने के स्वप्न का उपक्रम अहर्निश, अविराम चलता रहे।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं और हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय अमोडी, चम्पावत, उत्तराखंड से जुड़े हैं)

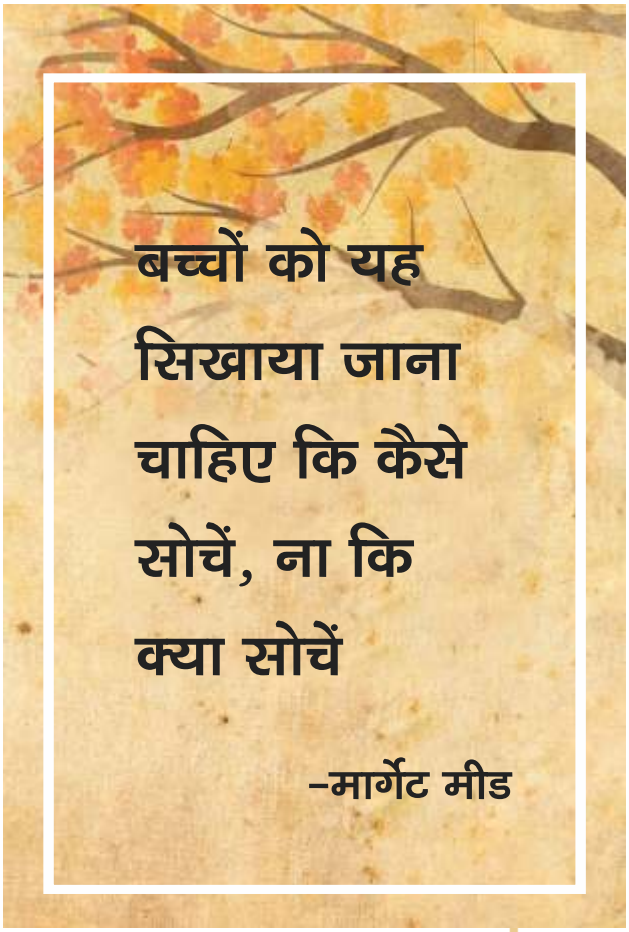

Principal
Rajkiya Mahavidyalaya
Amori, Champawat-262523
Uttarakhand

LOCAL INSTITUTIONS AND ENVIRONMENTAL GOVERNANCE IN HIMALAYA

DR SANJAY KUMAR

Scanned with OKEN Scanner

Price : Rs. 750.00

First Edition : 2022

ISBN : 978-93-91214-78-4

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means without prior permission from the Author & Publisher.

© All Right Reserved

Publisher:

Shivalik Prakashan

4648/21, Ansari Road
Darya Ganj, New Delhi-110002
Phone : 011-42351161
Mob. : +9811693579
E-mail : shivalikprakashan@yahoo.com

International Branch:

64, Grant Boulevard, Dundas
Ontario, Canada L.9H 4MI

Printed in India

Published by Virendera Tiwari for Shivalik Prakashan, 4648/21, Ansari Road, Daran Ganj, New Delhi-110002. Type Setting Aadil Printographics and Printed by R.K. Offset Printers, Delhi.

Local Institutions and Environmental Governance in Himalaya

By

Dr. Sanjay Kumar

Scanned with OKEN Scanner

Contents

भूमिका *vii*

आभार *ix*

सम्पादक की कलम से... *xiii*

List of Contributors *xvii*

1. Hydropower Projects: An Analytical Study of Indian Himalayan Region — *Dr. Sandeep Kaur & Ms. Anupama Sharma* 1
2. Challenges and Problems Faced by the Indian Economy — *Smt. Chayashree, K.* 20
3. Ecocriticism: Reflection of Nature in Indian English Fiction — *Dr. Ranjana Singh* 27
4. Economic Growth and Sustainable Development: A Case Study of Himachal Pradesh — *Dr. Sandeep Kaur & Pooja Gothwal* 36
5. Uttarakhand: Ecological Sustainability in the Path of Development of a Himalayan State — *Mr. Mohit Kalra* 54
6. Climate Change; Its effect and Impact in the Himalayan Region — *Abhisek Sarta* 69
7. Hydro-Power Projects in Hills: Blessing or a Curse — *Dr. Meenakshi Kimta* 78

Scanned with OKEN Scanner

8. छायावादी काव्य में पर्यावरण चेतना 88
– डॉ. मन्जू कोजियाल
9. उत्तराखण्ड राज्य के आर्थिक विकास में पर्यटन क्षेत्र की भूमिका – समीक्षात्मक अध्ययन 96
– डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
10. पर्यावरण अवनयन : कारण, प्रभाव एवं उपचार 106
– डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा एवं डॉ. सुल्तान सिंह यादव
11. हिमालयी पर्यावरण एवं जनसहयोग चुनौतियाँ और समाधान 113
– डॉ. मन्जू चन्द्रा
12. उत्तराखण्ड में माइग्रेशन और रिर्वस माइग्रेशन 121
– डॉ भुवन तिवारी एवं ताराचन्द्र'
13. लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का सिद्धान्त और व्यवहार : हिमालयी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता के सन्दर्भ में 133
– डॉ. प्रकाश लखेड़ा
14. पर्यावरणीय नैतिकता, कानून और शिक्षा 155
– मनोज कुमार
15. जलवायु परिवर्तन : इसका प्रभाव 174
– ताराचन्द्र
16. पर्वतीय क्षेत्र में इको (पर्यावरण अनुकूल) उद्यमों की सार्थक संकल्पना 185
– डॉ. अनु पाण्डेय

COORDINATOR
IQAC/NAAC
RAJKIYA MAHAVIDYALAYA AMORI
(CHAMPAWAT) UTTARAKHAND

Principal
Rajkiya Mahavidyalaya
Amori, Champawat-262523
Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner

COVID - 19

AND ITS SOCIO-ECONOMIC REPERCUSSIONS

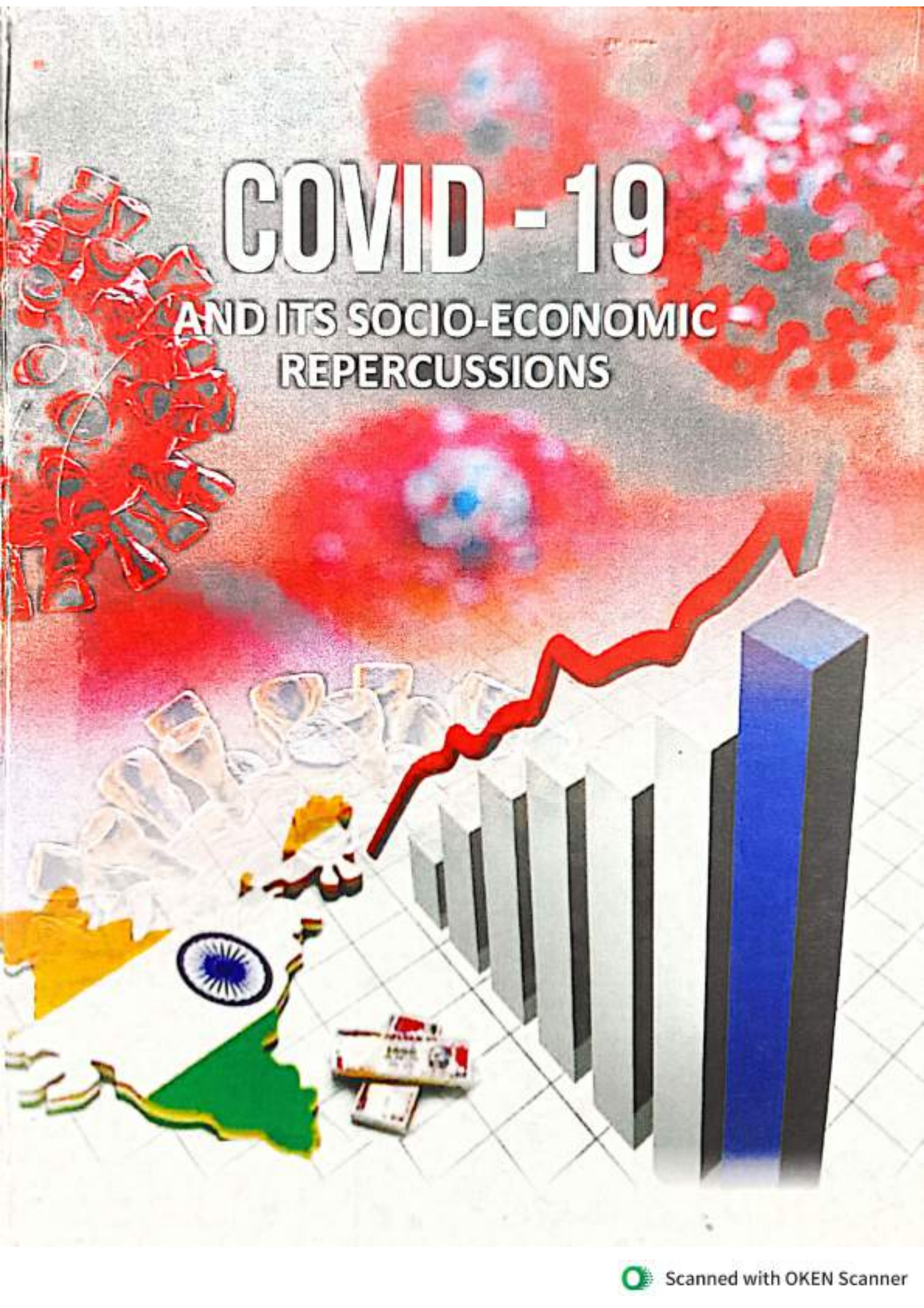

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक / लेखक	पृष्ठ सं.
1	कोरोनाः समस्या एवं समाधान (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) / प्रो0 इला साह, डॉ0 ललित चंद्र जोशी	13
2	कोरोना वायरस (कोविड–19): भारत के संदर्भ में / डॉ0 मुन्नी पाठक एवं डॉ0 आर.ए. सिंह	24
3	कोविड–19 और उसके सामाजिक और आर्थिक परिणाम / डॉ0 संजीव आर्य, डॉ0 कुसुमलता आर्य	36
4	महामारी कोविड–19 एवं शिक्षा का बदलता परिदृश्य / डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार, डॉ0 एस0के0 आर्य	51
5	कोविड–19 और उसके सामाजिक और आर्थिक परिणाम के अंतर्गत ऑनलाइन शिक्षा वरदान या अभिशाप के परिपेक्ष्य में / डॉ0 भगवती नेगी, डॉ0 हेमलता, डॉ0 किरन	59
6	कोविड–19 : भूमण्डलीकरण का बदलता परिवेश / डॉ0 संजय कुमार	71
7	कोरोना काल में भारत के समग्र विकास की रणनीति / डॉ0 राखी सिंह	79
8	ऑनलाईन शिक्षाः आशीर्वाद या अभिशाप / डॉ0 अमिता श्रीवास्तव	87
9	उत्तराखण्ड में प्रवासियों की वापसी एवं सरकारी प्रयास (कोविड–19 के विशेष संदर्भ में) / डॉ0 मनोज कुमार पन्त, डॉ0 कवलजीत कौर	102
10	Covid 19 and its impact on gender diversity in workforce / Dr. Manju Chandra	113
11	Relevance of Mental health and well-being in present context / Dr. Kalpana Patni Lakhera, Dr. Prakash Lakhera	131

Scanned with OKEN Scanner

कोविड–19 : भूमण्डलीकरण का बदलता परिवेश

डॉ0 संजय कुमार

कोविड–19 महामारी ने इस सदी में एक बार फिर विश्व को वृहद स्तर पर प्रभावित किया है, इससे पूर्व कई महामारियों ने विश्व के आर्थिक विकास की अन्धी दौड़ पर प्रश्न चिन्ह लगाया है फिर भी विश्व के प्रत्येक देश विकास की होड़ में आर्थिक व सैन्य गतिविधियों को वरीयता प्रदान कर रहे हैं जहां मानव व उसका स्वास्थ्य दूसरे स्थान पर चला गया है, विश्व ने पूर्व की महामारियों से खतरे का संदेश तो लिया परन्तु धरातल पर उस स्तर का व्यापक कार्य नही किया जिस स्तर पर भूमण्डलीकरण के बदलते परिवेश में होना चाहिए था आज हम अधिक से अधिक प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर इस सुन्दर गृह को बीमार करते जा रहे हैं। जिस गति से बढ़ती आबादी द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया गया उस गति से प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित नही किया गया है, और न ही बढ़ाने का कार्य किया गया जिसका परिणाम वैश्वीकरण में सम्पूर्ण विश्व महामारियों व अन्य समस्याओं से घिरता जा रहा है। भारत व विश्व ने पहले भी हैजा, स्पेनिश फ्लू, ब्लैक डैथ, एंतोनाइन प्लेग, जस्टिनियन प्लेग, एच–1एन–1 फ्लू, सार्स या बर्ड फ्लू जैसी विभिन्न महामारियों का सामना किया है जो अब भूमण्डलीकरण के दौर में 24 घण्टे के मध्य विश्व के एक देश से दूसरे देश तक फैल जाती है, क्योंकि हवाई सेवाएं मनुष्य को ही नहीं बीमारियों को भी तीव्र गति से फैलने में सुगम बना रहीं हैं इसी का परिणाम है कि 2003 में सार्स महामारी से लगभग 8 हजार लोग प्रभावित हुए थे जबकि कोविड–19 से तो लगभग 1

Scanned with OKEN Scanner

करोड़ से भी अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी है जबकि 10 करोड़ से भी अधिक लोग इसकी चपेट मे आकर प्रभावित हुए हैं। वैश्वीकरण के उपभोक्तावादी मॉडल ने मनुष्य व पशुओं की घनिष्टता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है, क्योंकि कोरोना वायरस के उत्पन्न होने में चीन के खान–पान पर भी प्रश्न उठ रहे हैं, जैसा कि "एड्स के बारे में भी कहा जाता है कि मानव बस्तियों में रहने वाले पालतू कुत्तों ने उन वाह्याकृतिक हरे बन्दरों का माँस खाया और फिर वे कुत्ते मनुष्यों के सम्पर्क में आ गये और एड्स का विषाणु मनुष्यों में प्रवेश कर गया कमोवेश यही स्थिति बर्ड फ्लू के बारे में भी कहा जाता है कि मवेशियों के दिमाग को बदबदा देने वाली बीमारियाँ 'मैड काउ' या 'सीजेडी' तथा 'बोवाइन स्पांजीफार्म एनसिफेलोपैथी' तभी मनुष्यों तक पहुँची, जब बीमार पशुओं का माँस मनुष्यों ने खाया।"[1]

कोई भी ऐसी बीमारी जो एक देश से दूसरे देश या एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में तेजी से फैलते हुए प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को प्रभावित करे तो उसे ही सार्वदेशिक (Pandemic) रोग के नाम से जाना जाता है। Pandemic को विभिन्न शब्द कोषों में 'Pandemic over the large region'[2] एवं 'A desease that spread over a whole country or the whole world'[3] के रूप मे परिभाषित किया गया है।

कोविड –19 क्या है –

कोविड–19 को नॉवल कोरोना वायरस के नाम से भी जाना जाता है विभिन्न संचार माध्यम एवं पत्र पत्रिकाओं से ज्ञात हुआ कि दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान शहर से इसका संक्रमण फैला, जबकि हाल ही में डब्ल्यू0 एच0 ओ0 की सर्वेक्षण टीम ने कोरोना वायरस को वुहान शहर से फैलने से इंकार किया है। इस महामारी में तेज बुखार आना, खांसी,

Scanned with OKEN Scanner

श्वसन क्रिया बाधित होना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं, तथा अधिकांशतः 10 वर्ष से कम आयु के बच्चों तथा 60 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्ग व्यक्तियों को अधिक प्रभावित करता है क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity System) से जुड़ा है, कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले व्यक्तियों को जल्दी प्रभावित करता है।

कोरोना वायरस का जिक्र उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद की इण्टरमीडिएट पाठ्यक्रम जन्तु विज्ञान की पुस्तक में भी मिलता है।[4] लेकिन वह एक सामान्य वायरस है जबकि इसे नोवल कोरोना वायरस के नाम से जाना जा रहा है जो पहले के वायरस से अधिक घातक एवं खतरनाक साबित हुआ है।

भूमडण्लीकरण क्या है–

वैश्वीकरण अथवा भूमण्डलीकरण अंग्रेजी शब्द Globalisation के पर्यायवाची हैं जब विश्व के 'प्रत्येक देशों के साथ आपस में वस्तु–विनिमय, सेवा, पूँजी, भौतिक सम्पदा, सांस्कृतिक परम्पराओं का आदान–प्रदान होता है उसे ही वैश्विक भूमण्डलीकरण के रूप में जाना जाता है।[5] जहाँ सम्पूर्ण विश्व एक विश्व कुटुम्ब (GlobalVillage) के रूप मे परिवर्तित हो रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद साम्यवादी व पूँजीवादी नीतियों का विस्तार बढ़ता गया और विश्व के प्रत्येक देश इन दोनों विस्तारवादी नीतियों से अप्रभावित नहीं रहे, लेकिन उसी दौरान 20वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में मिखाइल गोरवाचोब की 'ग्लासनोतस' और 'पेरीस्त्राइका' की नीतियों के तहत सोवियत संघ के विघटन के बाद 15 नये स्वतंत्र देशों का जन्म हुआ तो समूचे यूरोप में साम्यवाद ने अन्तिम सांस ली, और राज्य नियन्त्रित आयोजनागत विकास के स्थान पर माँग और पूर्ति से नियन्त्रित बाजारी अर्थव्यवस्था को अपनाया गया। सं0 रा0 अमेरिका विश्व की एकमात्र महाशक्ति के रूप उभरा और उसी के नेतृत्व में विश्व बैंक,

Scanned with OKEN Scanner

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, तथा 1 जनवरी 1995 को गैट के स्थान पर अस्तित्व में आए, विश्व व्यापार संगठन ने आर्थिक क्षेत्र में जिस नीति को अपनाने पर तृतीय विश्व के देशों पर दबाव डाला उसे एल0 पी0 जी0 (Liberalisation, Privatization, Globalisation) अर्थात् उदारीकरण निजीकरण तथा वैश्वीकरण की नीति कहा जाता है।[6]

कोरोना राष्ट्रवाद –

कोरोना वैक्सीन बनाने में कई राष्ट्रों ने दावा किया और वैक्सीनेशन के ट्रायल लगभग हो चुके हैं जिसमें प्रत्येक देश अपनी वैक्सीन को दूसरे देश से बेहतर साबित करने की कोशिश कर रहे हैं उसी क्रम में भारत में भी दो वैक्सीन कोविशील्ड व कोवैक्सीन को सरकार द्वारा लगाने की मंजूरी दी गयी है। जिसमें कोवैक्सीन तो पूरी तरह भारत में बनी वैक्सीन है, जबकि कोविशील्ड आक्सफोर्ड– एस्ट्राजेनेका का भारतीय संस्करण है। भारत द्वारा अपनी वैक्सीन पड़ोसी देशों में भेजकर मदद की जा रही है, परन्तु कोवैक्सीन के फेज 3 के ट्रायल चलने के दौरान सरकार द्वारा एकदम इसे लगाने की इमरजेंसी में दी गयी अनुमति पर प्रश्न चिन्ह लग रहे हैं।

कोरोना वैक्सीन को लेकर स्वदेशी बनाम विदेशी का मुद्दा भी उठाया जा रहा है दरअसल अदार पूनावाला जोकि सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के प्रमुख हैं, ने कहा था कि फाइजर, माडर्ना और आक्सफोर्ड एस्ट्राजेनेका ही कोविड वैक्सीन प्रभावशाली है अन्य कम्पनियों द्वारा बनाई जा रही वैक्सीन उतना ही शुद्ध है जितना पानी। इसके जबाव मे कोवैक्सीन बनाने वाली कम्पनी भारत बायोटेक के चेयरमैन कृष्ण इल्ला ने कहा कि "हमारा लक्ष्य उन आबादी तक वैश्विक पहुँच प्रदान करना है जिन्हें इसकी ज्यादा जरूरत है हम 200 फीसदी ईमानदार क्लीनीकल परीक्षण करते हैं अगर मैं गलत हूँ तो मुझे बताओ कुछ कम्पनियों ने हमारे टीके को

Scanned with OKEN Scanner

पानी की तरह बताया है मैं इससे इंकार करता हूँ हम वैज्ञानिक हैं हमारे ट्रायल पर कोई सवाल न उठाऐं।"[7]

कोविड वैक्सीन का ट्रायल एवं वैक्सीनेशन अभी कुछ देशों तक ही सीमित है हर देश पहले अपने को सुरक्षित करना चाहता है जबकि विश्व की 7 अरब आबादी तक इसकी पहुँच होना अत्यन्त आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय वैक्सीन गठजोड़ (गावी) के सी0 ई0 ओ0 बर्कले ने विश्व के उन देशों से कई बार अपील की जिन्होंने वैक्सीन निर्माता कम्पनियों से प्री–एग्रीमेंट सिर्फ अपने ही देश के नागरिकों के लिए किया है वे अन्य देशों के बारे में भी गम्भीरतापूर्वक सोचें, क्योंकि यदि आपके आस–पास कोरोना वायरस रह गया तो आप की सुरक्षा के कोई मायने नहीं रह जाते हैं। कोरोना काल एवं उसके बाद विश्व में अति राष्ट्रवाद की सम्भावनाएं बढ़ती जा रही हैं।

कोरोना वायरस एवं भूमण्डलीकरण :–

कोरोना वायरस का प्रभाव समूची दूनिया में पड़ा है इससे विश्व की समस्त आर्थिक, व्यापारिक, राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्था पर सीधा असर पड़ा है क्योंकि वायरस के तेजी से फैलने के कारण विश्व के अधिकांश देशों ने अपनी सीमाएं बन्द कर दी जिसका सीधा प्रभाव पर्यटन उद्योग, आयात–निर्यात, मनोरंजन, परिवहन सेवाएं, निर्माण कार्य पर पड़ा। विश्व में 2008 की मंदी जैसा असर देखा जा रहा है कई देशों की जी0डी0पी0 नकारात्मक हुई है जिसका सीधा असर वहाँ के नागरिकों के जीवन यापन पर पड़ रहा है।

कोरोना वायरस के भूमण्डलीकरण पर नकारात्मक व सकारात्मक दोनों पहलुओं पर असर देखा जा सकता है क्योंकि सम्पूर्ण विश्व जब एक वैश्विक गांव में परिवर्तित हो रहा है तो उसी का परिणाम है कि एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक महामारी को फैलने में कुछ घण्टे लग रहे हैं। वैश्विक खान–पान, रहन–सहन, संस्कृतियों का आदान–प्रदान जहां एक ओर नजदीकियां बढ़ा रहा है तो वहीं दूसरी ओर

Scanned with OKEN Scanner

वैश्विक असुरक्षा भी पैदा कर रहा है क्योंकि विकसित देशों की विकास की दौड़ प्राकृतिक संसाधनों के अधिकांश विदोहन पर टिकी है जिसका सीधा असर जलवायु परिवर्तन पर पड़ रहा है और उसका नकारात्मक प्रभाव विकासशील व अल्पविकसित देशों को भी झेलना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन का ही असर है जो उत्तराखण्ड के चमोली जिले में हिमखण्ड के एक भूखण्ड का लाखों मीट्रिक टन हिस्सा टूटकर गिरने से एन0टी0पी0सी0 का ऋषि गंगापावर प्लांट लगभग पूरी तरह खत्म हो चुका है और जल प्रलय आने से 70 से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी है एवं सैकड़ों लोग लापता हैं। ऐसी घटनाओं से बचने के लिए अंधा–धुंध उपभोक्तावाद पर आधारित पूँजीवादी मॉडल की फिर छानबीन करने की जरूरत है। बेकाबू वैश्वीकरण के कारण राष्ट्रों के बीच और देशों के भीतर बहुत अधिक असमानता फैल गयी है वैश्वीकरण का जोर सम्पदा के सृजन पर अधिक है उसके वितरण पर नहीं।[3]

भूमण्डलीकरण को सकारात्मकता के दृष्टिकोण से देखा जाय तो कोरोना वायरस ने विश्व की स्वास्थ्य व्यवस्था को एक चुनौती दी है कि आर्थिक और व्यापारिक विकास के साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं पर अधिक निवेश, वैज्ञानिक अनुसंधान आदि किया जाना चाहिए सिर्फ चाँद, मंगल ग्रहों आदि पर जाने की संकल्पना के साथ ही यह भी तय करना होगा कि आम नागरिक के जीवन में कितना मंगल है। कोविड–19 महामारी ने आर्थिक रूप से विश्व को बहुत नुकसान पहुँचाया है, एक ही झटके में विश्व का आर्थिक सेंसेक्स धरातल पर आ गया। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का अनुमान है कि विश्व में 1.25 अरब कामगार यानी वैश्विक श्रमबल का लगभग 38 प्रतिशत हिस्से पर रोजगार का संकट आ गया है।

जिस प्रकार संसार में सब जीवधारी एक दूसरे पर निर्भर है उसी तरह विश्व के प्रत्येक देश एक दूसरे पर निर्भर है यह

Scanned with OKEN Scanner

निर्भरता संसाधन, सूचना और ज्ञान सभी क्षेत्रों में है जब तक दुनिया के सभी देश मिलकर अपनी खोज व जानकारी को ईमानदारी से साझा नहीं करते हैं तब तक किसी भी अनुसंधान का अधिकतम प्रतिफल उस देश को भी प्राप्त नहीं हो सकता जिसने उसकी खोज की है।

नोवल कोरोना वायरस ने संस्कृत की प्रसिद्व युक्ति "शरीर माद्वयम खलु धर्म साधनम" को चरितार्थ किया है कि स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है और स्वास्थ्य ही शरीर का सबसे बड़ा विकास है। जिस देश के नागरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से सबसे अच्छी अवस्था में होंगे वही देश सबसे अधिक विकसित माना जायेगा साथ ही लोकवित के वितरण में स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सम्बन्धी अनुसंधान और उसके नेटवर्क को बढ़ाया जाना ही सर्वोपरि होना चाहिए। दक्षिण एशिया या सार्क के देशों में प्रति 1000 व्यक्तियों पर चिकित्सक एवं स्वास्थ्य सेवायें बहुत कम हैं इस क्षेत्र में भारत एक बड़ा देश है उसके पास प्रगति करने का एक अच्छा अवसर है इस वर्ष के बजट में स्वास्थ्य सम्बन्धी बजट बढ़ाकर इसे सरकार द्वारा आगे बढ़ाने का सराहनीय प्रयास किया गया है। अटल आयुष्मान योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन आदि से अधिक से अधिक सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। जो भविष्य में स्वास्थ्य की सार्थकता साबित करेगा।

अर्थशास्त्री एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में ग्लोबलाइजेशन व डेवलपमेंट के प्रो0 इयान गोल्डिन ने कोरोना की वर्तमान महामारी की भविष्यवाणी अपनी किताब "द बटरफ्लाई डिफेक्ट हाउ ग्लोबलाइजेशन क्रिएट्स सिस्टमिक रिस्क एंड वाट टू डू अबाउट इट" में पहले ही कर दी थी। और कहा कि मैं लम्बे समय से महसूस कर रहा हूँ कि वैश्वीकरण पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। अब समय आ गया कि भूमंडलीकरण को लेकर नई सोच विकसित की जाए। भूमंडलीकरण एक चौराहे पर खड़ा है आज जबकि दुनिया

Scanned with OKEN Scanner

प्रतिदिन खंड–खंड होती जा रही है, तो ऐसे में भूमंडलीकरण के प्रति समर्थन को पुनर्जीवित करने की चुनौती और बड़ी होती जा रही है और कोरोना वायरस के प्रकोप की चुनौती से इस दिशा में सोचने की रफ्तार और तीव्र होगी।

सन्दर्भः–

1. डा0 एस वर्मा, 'बर्ड फ्लूः दुनिया को चिंता में डालती बीमारी' प्रतियोगिता दर्पण सितम्बर 2004 पृ0स0 1711
2. Webster new world ,dictionary and thesaurus second edition, page no. 460
3. Oxford advanced learner's dictionary, seventh edition -2005, page no.1096
4. रमेशगुप्ता,' आधुनिक जन्तु विज्ञान', प्रकाश पब्लिकेशन, मुजफ्फरनगर पृष्ठ संख्या 1072।
5. डॉ0 चतर्भुज मामोरिया एवं डॉ0 जे0 पी0 मिश्रा 'भारत का भूगोल' साहित्य भवन प्रकाशन आगरा 2008,पृ0 सं0 381
6. डा0 श्याम सुन्दर सिंह चौहान, 'वैश्वीकरण का सामाजिक स्वरूप' प्रतियोगिता दर्पण सितम्बर 2004 पृ0सं0 293
7. com.cdn.ampproject.org.8
8. अरविन्द गुप्ता 'कोविड–19 संकट का वैश्विक प्रभाव 'विवेकानन्द अन्तराष्ट्रीय संस्थान अप्रैल 2020

Principal
Rajkiya Mahavidyalaya
Amori, Champawat-262523
Uttarakhand

Scanned with OKEN Scanner